# इकाई 8 क्षेत्रीय राजनीति की प्रकृति

## इकाई की रूपरेखा



## 8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारतीय राजनीतिक संगठन को जान सकेंगे;
- भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी तथा पूर्वी भारत; पश्चिमी तथा मध्य भारत, दक्खन एवं दक्षिणी भारत के भागों में हुए प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम को जान लेंगे;
- पश्चिम एवं मध्य एशिया में हुए राजनीतिक परिवर्तनों और भारतीय उपमहाद्वीप में घटित राजनीतिक घटनाक्रमों के मध्य संपर्क के विषय में जान सकेंगे; तथा
- सन् 800-1300 ई. तक के राजनीतिक संगठन के पुनर्गठन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

## 8.1 प्रस्तावना

इस इकाई में भारतीय राजनीतिक संगठन के प्रमुख अंगों को राजनीतिक घटनाक्रम के द्वारा परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। इस उद्देश्य से भारतीय उपमहाद्वीप को कई भागों में विभाजित किया गया है। भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं के पार अर्थात् पश्चिम एवं मध्य एशिया में घटित कुछ परिवर्तनों का भारतीय राजनीतिक घटनाक्रम पर प्रभाव की भी विवेचना करने का प्रयास किया है। अंत में, इस इकाई में क्षेत्रीय राजनीति की प्रकृति अर्थात् भारत में राजनीतिक संगठन के स्वरूपों की विशेषताओं के प्रश्न की विवेचना की गई है।

राजनीतिक संगठन के अंतर्गत राजनीतिक शक्ति की प्रकृति, संगठन एवं वितरण का विश्लेषण शामिल है। आर्थिक एवं भौगोलिक क्षमताओं की विभिन्नताओं के कारण राजनैतिक व्यवस्थाएं भिन्न-भिन्न थीं। भारत में सन 800-1300 ई. के मध्य की अवधि न केवल आर्थिक निर्माण की दृष्टि से (देखिए खंड-1) बल्कि राजनीतिक प्रक्रियाओं के दृष्टिकोण में भी बड़ी महत्वपूर्ण थीं। वास्तव में ये दोनों एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। इस काल के राजनीतिक संगठन की प्रकृति को भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं के संदर्भ में ही अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

## 8.2 प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम

हमें मुख्यतया उत्तरी, पूर्वी, मध्य, पश्चिमी और दक्षिण भारत के राजनीतिक घटनाक्रम की विस्तृत छानबीन करनी है। इसके अतिरिक्त इस काल में दक्खन में भी एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति का अस्तित्व था।

## 8.2.1 उत्तरी तथा पूर्वी भारत

### 1) कश्मीर

कश्मीर अधिकांशतया अपनी आंतरिक राजनीतिक गतिविधियों में ही संलग्न रहता था लेकिन कभी-कभी यह उत्तरी भारत की राजनीति में भी सम्मिलित हो जाता था। इस पर कारकोत, उतोपाल और दो लोहार वंशों के द्वारा शासन किया गया। मुक्तविद, जिसे ललितादित्य के नाम से भी जाना जाता है, उसने कन्नौज एवं तिब्बत के कुछ भागों पर विजय प्राप्त की। कारकोत वंश के कई शासकों ने कश्मीर में सिंचाई सुविधाओं की भी व्यवस्था की। कश्मीर के इन राजाओं ने नदियों के किनारे बांधों एवं झीलों का निर्माण कराया जिससे कि घाटी के काफी बड़े क्षेत्र पर खेती की जाने लगी। लेकिन कश्मीर की राजनीति में दसवीं शताब्दी में नवीन परिवर्तन हुआ। शासकों की सैन्य अभिलाषाओं एवं भाड़े पर युद्ध करने वाले योद्धाओं के उद्भव ने सामान्य लोगों की स्थिति को शोचनीय बना दिया और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया। सन् 1000 से 1300 ई. के मध्य यहां पर लगभग 20 शासकों ने शासन किया। ये शासक अक्सर शक्तिशाली पुरोहितों एवं शक्तिशाली दमरा सामंतों के हाथ की कठपुतली बन जाते थे। पुरोहितों एवं दमरा सामंतों में भी संघर्ष हुए। रानी दि द्दा और संग्राम राप, कलश, हर्ष, जयसिंह तथा सिंहदेव जैसे राजा इन शताब्दियों की राजनीति में शामिल थे।

### 2) गंगा घाटी, कन्नौज

गंगा घाटी में स्थित कन्नौज अपनी भौगोलिक एवं सामरिक क्षमताओं के कारण राजनीतिक गुरुत्वाकर्षण का केन्द्र बन गया। यह दोआब के मध्य में स्थित था, जिसकी किलेबंदी सरलता से की जा सकती थी। कन्नौज पर नियंत्रण का अर्थ था गंगा दोआब के उपजाऊ पश्चिमी एवं पूर्वी भाग पर नियंत्रण। यह थल तथा जल मार्गों द्वारा भी देश के अन्य भागों से जुड़ा था। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कन्नौज पर नियंत्रण के लिए तीन समकालीन शासकों — पालों, गुर्जर प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों — के बीच बार-बार संघर्ष होता रहा। पाल मुख्यतः पूर्वी भारत, प्रतिहार पश्चिम तथा राष्ट्रकूट दक्खन भारत में केन्द्रित थे। लेकिन ये तीनों गंगा के मैदान मुख्यतः कन्नौज पर नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे। इन तीनों के साम्राज्यों की राजनीतिक सीमाओं में समय-समय पर परिवर्तन होता रहता था।

### 3) बिहार एवं बंगाल

पालों का राजनीतिक आधार बिहार तथा बंगाल की उपजाऊ भूमि एवं उनके विदेशी व्यापारिक संबंध थे विशेषकर दक्षिणी पूर्वी एशिया के साथ। पाल वंश का संस्थापक गोपाल था। उसने आठवीं सदी के प्रारंभ में बंगाल को अराजकता की स्थिति से उबारा। गोपाल से पहले बंगाल में **मत्स्य-न्याय** या मछलियों का कानून था, राजनीतिक अस्थिरता जिसकी विशेषता थी। धर्मपाल ने कन्नौज के विरुद्ध एक सैनिक अभियान का सफलतापूर्वक संचालन किया किन्तु अधिक समय तक वह कन्नौज पर अपना नियंत्रण कायम न रख सका। कन्नौज पर पाल शासकों के नियंत्रण की असफलता ने उन्हें अपना प्रभाव पूर्व की ओर फैलाने के लिए बाध्य किया। देवपाल ने प्राग्जयोतिषपुर (असम) को पालों के प्रभाव क्षेत्र में ले लिया और नेपाल ने भी पालों के प्रभुत्व को स्वीकार किया। देवपाल की मृत्यु के बाद उत्तर भारतीय राजनीति में पाल शासक प्रभावशाली नहीं रहे यद्यपि इस वंश का शासन 13वीं सदी ई. के प्रारंभ तक जारी रहा। पालों का राजनीतिक संगठन राजतंत्रीय ढांचे के अंतर्गत ही था, जिसमें व्यक्तिगत एवं राज्य हित साथ-साथ विकसित हुए। साम्राज्य में कुछ ऐसे भाग थे, जिन पर प्रत्यक्ष प्रशासन चलता था और कुछ क्षेत्र में राजा के सामंत प्रशासन चलाते थे। पाल वंश का अंतिम महत्त्वपूर्ण शासक रामपाल था। उसने सन् 1080 से 1122 ई. तक शासन किया। रामपाल ने प्रशासन को **उपरिका, विषय** (ज़िला), **सामंत चक्र** (सामंत सरदारों का क्षेत्र) में संगठित किया। उसके शासन काल की एक अन्य विशेषता **कैवर्त्ता** के किसानों का विद्रोह था।

### 4) असम

इन सदियों के दौरान असम राजनीतिक संगठन के रूपांतरण की प्रक्रिया में था। असम दो नदी की घाटियों, ब्रह्मपुत्र एवं सुरमा, के बीच में स्थित है। सातवीं सदी ई. में वर्मन शासकों ने अपने शासन की स्थापना की और ब्रह्मपुत्र घाटी का कामरूप में राजनीतिक एकीकरण किया। वर्मन शासकों ने ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिए और ब्राह्मणों ने इनके बदले में कृषि भूमि का विस्तार किया तथा आदिवासी लोगों को राज्य व्यवस्था के ढांचे में शामिल किया। वर्मन शासकों ने सिंचाई के लिए बड़े-बड़े बांधों का निर्माण किया, जिससे रोपाई द्वारा चावल की खेती को काफी प्रोत्साहन मिला। प्राग्ज्योतिषि में शलस्तम्भा राजाओं ने आठवीं एवं नौवीं सदी में भी वर्मन राजाओं की परम्परा को जारी रखा। उन्होंने भी ब्राह्मणों तथा अन्य संस्थाओं को बहुत-से भूमि अनुदान प्रदान किए। बाद में पाल शासकों ने भी इस परम्परा को जारी रखा। असम के मध्यकालीन अभिलेखों में **राजा, रजनी, राजपुत्र** और **राजन्यका** जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द संभवतः मध्यस्थ भू-स्वामियों के लिए प्रयोग हुए हैं।

### 5) उड़ीसा

उड़ीसा में बंगाल की खाड़ी के तट के साथ-साथ तथा पहाड़ी वनों में अनेक छोटे राज्यों एवं रियासतों का उदय हुआ। कलिंग, कोंगोद, दक्षिण तोसाली एवं उत्तर तोसाली बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित थे और दक्षिण कोसल महानदी की ऊपरी घाटी में स्थित था। राज्यों की सीमाएं समय-समय पर बदलती रहती थीं लेकिन उनके केन्द्रों के नक्शे तथा उनके द्वारा शासित मुख्य क्षेत्र छठी सदी ई. से 12वीं सदी ई. तक लगभग एक समान ही थे। राजाओं ने ब्राह्मणों को

भूमि अनुदान दिए जिन्होंने बहुत से प्रशासनिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न किया। धार्मिक संस्थाओं को भी भूमि अनुदान दिए गए। नदी के उपजाऊ केन्द्रीय क्षेत्रों में धान की खेती तथा बाह्य एवं आंतरिक व्यापारिक संपर्कों ने विभिन्न राज्यों में राज्य व्यवस्था के निर्माण को तीव्र किया। सोमवंश से संबंधित सरदारों ने प्रारंभ में पश्चिमी उड़ीसा और फिर धीरे-धीरे उड़ीसा के अधिकतर भू-भाग पर अपने शासन का विस्तार किया। 'सुलकियों के पतन के बाद भौमकारों ने संभवतः कोदलक मंडल (ढेंकानल जिला) को तुंग एवं नंद के सामंतीय परिवारों में बाँट लिया। भंजों के विषय में हमें करीब पचास अभिलेखों से जानकारी प्राप्त होती हैं। इस वंश की कई शाखाएँ थीं। मयूर भंज, क्योंझर, बन्ध, सोनपुर एवं गुमसूर उड़ीसा के ऐसे क्षेत्र थे, जिन पर भंज वंश के परिवारजनों का अधिपत्य था। गंगा वंश के शासकों ने 12वीं शताब्दी ई. में कोणार्क के सूर्य मन्दिर जैसे अनेक मंदिरों का निर्माण कराया तथा आदिवासी क्षेत्रों पर अपने अधिकार को सुदृढ़ किया।

1. गंगा वंश का शासक नरसिंह देव जिसने कोणार्क में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया

### 8.2.2 पश्चिमी तथा मध्य भारत

पश्चिमी भारत में मालवा और गुजरात का क्षेत्र गुर्जर प्रतिहारों के प्रभाव में था। मालवा काफी उपजाऊ क्षेत्र था और गुजरात बाह्य तथा आंतरिक व्यापार तंत्र का एक भाग था। प्रतिहारों ने अरब आक्रमणों का विरोध किया, और वे उत्तर भारत की राजनीति में भी भाग लेने लगे। कन्नौज का प्रलोभन भी बहुत अधिक था। प्रतिहार वंश के महानतम सम्राट भोज ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया और यह कुछ समय तक उसके साम्राज्य का अंग रहा। बाद में गुजरात राष्ट्रकूटों के हाथों में चला गया जिससे प्रतिहारों का आर्थिक आधार नष्ट हो गया। लेकिन भोज के उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल ने उत्तराधिकार में प्राप्त साम्राज्य को न केवल अक्षुण्ण बनाए रखा, अपितु पूर्व की ओर इसका विस्तार किया। महेन्द्रपाल के बारे में सात प्रमाण दक्षिणी बिहार एवं उत्तरी बंगाल से प्राप्त हुए हैं (जो उसके पूर्व की ओर किए गए विस्तार को सिद्ध करते हैं)।

दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य एवं पश्चिमी भारत में अनेक राजवंशों का उदय हुआ। ये वंश स्वयं के राजपूत होने का दावा करते थे और उनमें से बहुत से गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे। इन राजपूत परिवारों का उदय भूमि अनुदानों की बढ़ती संख्या और फलस्वरूप नवीन भू-संबंधों के विकास से था। वे स्थानीय तथा विदेशी तत्वों के सम्मिश्रण की उपज थे और उनमें से कुछ वंशों के एकीकरण का परिणाम, पश्चिमी एवं मध्य भारत में इन नवीन उदित राजवंशों में खजुराहों के चन्देलों, अजमेर के चौहानों, मालवा के परमारों, त्रिपुरी (जबलपुर के पास) के कलाचुरियों, गुजरात के चालुक्यों, मेवाड़ के गुहिलों तथा आधुनिक दिल्ली के तोमरों को शामिल किया जा सकता है। इन विभिन्न राजपूत वंशों के शासकों ने विशाल स्तर पर किलों को बनवाया और जो शक्ति के केन्द्र थे। कुछ राजपूत वंशों में अंतर्जातीय विवाहों से उनके सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों के क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई।

उत्तर, पश्चिमी और मध्य भारत में राजनीतिक घटनाक्रमों को पश्चिम तथा मध्य एशिया में होने वाले परिवर्तनों ने काफी प्रभावित किया। पहले व्यापारियों और फिर बाद में आक्रमणकारियों के रूप में आने वाले अरबों ने (सन् 700 से 800 ई.) भारत पर काफी प्रभाव डाला। गुर्जर प्रतिहारों, पालों एवं राष्ट्रकूटों को राजनीतिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में उनकी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। समानिद वंश ने ट्रांस-ओक्सियाना, खुरासान और ईरान के कुछ भागों पर नौवीं सदी ई. में शासन किया। समानिद गवर्नरों का एक तुर्की गुलाम अलप्तिगिन था, जिसने बाद में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और गजनी को राजधानी बनाया। कुछ समय बाद महमूद ने (998-1030 ई.) गजनी के सिंहासन पर अधिकार कर लिया और मुल्तान तथा पंजाब को भी अपने अधीन कर लिया। महमूद ने भारत पर अनेक आक्रमण किए और अपनी स्थिति को मध्य एशिया में सुदृढ़ बनाया। उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान के गौरी वंश ने भी भारत पर आक्रमण किये। इस वंश के शहाबुद्दीन मुहम्मद (सन् 1173-1206 ई.) ने मुल्तान, उच्छ और लाहौर पर विजय प्राप्त कर पंजाब में अपना आधार बनाया और अंत में चौहान शासक पृथ्वीराज को सन् 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में पराजित कर दिया। उसने गहढ़वाल वंश के कन्नौज शासक जयचन्द्र को भी चन्दवार के युद्ध में सन् 1194 ई. में पराजित किया। मध्य एशिया के इन सरदारों के प्रयासों के फलस्वरूप कुतबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश जैसे मामलूक सुल्तानों के अधीन उत्तर भारत में 13वीं सदी ई. के प्रारंभ में तुर्क साम्राज्य की स्थापना हुई। देखें खंड 4।

**बोध प्रश्न 1**

1) उत्तरी भारत के प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रमों का 15 पंक्तियों में विवरण कीजिए।

......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................
......................................................................

2) पश्चिमी तथा मध्य भारत के राजनीतिक इतिहास को 10 पंक्तियों में बताइए।

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

3) निम्नलिखित में से जो कथन सही हों, उस पर सही (✓) का तथा जो गलत हों, उस पर गलत (×) का चिन्ह लगाइए :

i) गंगा घाटी में स्थित कन्नौज अपनी सामारिक एवं भौगोलिक क्षमताओं के कारण महत्त्वपूर्ण हो गया।

ii) राष्ट्रकूट मुख्य रूप से पूर्वी भारत में केंद्रित थे।

iii) वर्मन शासकों ने असम में सिंचाई सुविधाओं को विकसित किया।

iv) कोणार्क के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण 12वीं सदी ई. में किया गया।

### 8.2.3 दक्खन

दक्खन, जिसे उत्तर तथा दक्षिण भारत के बीच सेतु भी माना जाता है, आठवीं सदी ई. के प्रारंभ से ही राष्ट्रकूटों के नियंत्रण में था। उनका संघर्ष गुर्जर प्रतिहारों से गुजरात एवं मालवा पर आधिपत्य के लिये हुआ और उन्होंने गंगा घाटी पर भी अधिकार करने का प्रयास किया। उन्होंने पूर्वी दक्खन तथा दक्षिण भारत के राजवंशों को भी शांति से नहीं रहने दिया। वेंगी स्थित पूर्वी चालुक्यों (आधुनिक आंध्र प्रदेश), कांची के पल्लवों तथा मदुरई (आधुनिक तमिलनाडु) के पांडयों को भी उनके क्रोध का सामना करना पड़ा। ध्रुव (लगभग 780-930 ई.), अमोधवर्ष और कृष्णा द्वितीय (लगभग 894-914 ई.) राष्ट्रकूट वंश के प्रसिद्ध शासक थे। कल्यान के चालुक्य, देवगिरी के यादव और वारंगल के काकतेय दक्खन भारत के कुछ अन्य राजवंश थे। अंततः इन परिस्थितियों में उत्तर भारत में 13वीं सदी ई. के प्रारंभ में तुर्क साम्राज्य का उद्भव हुआ।

### 8.2.4 दक्षिणी भारत

दक्षिणी भारत के अंतर्गत वह संपूर्ण प्रायद्वीप आता है जो 13° उत्तरी अक्षांश के दक्षिण में तथा मालाबार एवं कोरोमंडल समुद्र तटों के बीच स्थित है। इस भू-भाग के अंतर्गत आधुनिक तमिलनाडु, केरल, दक्षिणी कर्नाटक और दक्षिणी आंध्र प्रदेश आता है। कोरोमंडल (चोलमंडलम से), प्रायद्वीप के छोर से कृष्णा एवं गोदावरी नदियों के चौड़े डेल्टे के उत्तरी छोर तक, का मैदान दक्षिण भारत के क्षेत्र का मुख्य भू-भाग था। तमिल मैदान का उत्तरी भाग तोन्दायमण्ड्लम था और पण्डिमण्ड्लम प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग था। मालाबार तट अपनी समुद्री व्यापारिक क्षमताओं के लिए महत्वपूर्ण था। कोरोमंडल तट पर भी कावेरीपट्टनम, पाण्डिचेरी, मसूलिपट्म आदि जैसे बंदरगाह स्थित थे। इन भौगोलिक विशेषताओं ने दक्षिण भारत के राजनीतिक ढांचे को बहुत अधिक प्रभावित किया।

आठवीं सदी ई. के मध्य तक अपने समय के शक्तिशाली पल्लव तथा चालुक्य राज्यों की शक्ति काफी क्षीण हो चुकी थी। लेकिन उनकी परम्पराओं को उनके उत्तराधिकारी राजवंशों चोल एवं राष्ट्रकूटों ने बनाए रखा। कावेरी घाटी एवं कर्नाटक क्षेत्र में आधारित राज्यों के बीच कई शताब्दियों तक संघर्ष होता रहा जो इन शक्तियों के मध्य एक राजनीतिक नियम सा बन गया। ऐसा केवल आठवीं सदी ई. के अंत एवं नौवीं सदी ई. के प्रारंभ में राष्ट्रकूट तथा पल्लवों के मध्य ही नहीं था बल्कि राष्ट्रकूटों तथा पल्लवों के उत्तराधिकारी चोलों के बीच भी यह संघर्ष निरंतर बना रहा। राष्ट्रकूटों के राजनीतिक उत्तराधिकारी पश्चिमी चालुक्यों ने भी संघर्ष की इस परम्परा को जारी रखा और 11वीं सदी के प्रारंभ से अक्सर उनका चोलों के साथ संघर्ष होता रहा। प्रायः दक्खन के छोटे-छोटे राज्यों जैसे नोलम्बों, वैदुम्बों, बानों को इन बड़ी शक्तियों के संघर्ष का शिकार होना पड़ता था। इन शक्तियों के बीच वेंगी (आंध्र प्रदेश के समुद्र तट पर स्थित) भी संघर्ष का मुख्य कारण बना रहा।

दसवीं सदी ई. के बाद की दक्षिण भारत की राजनीति की तीन प्रमुख विशेषताएं थीं :

1) चोल, पाण्ड्य एवं चेरों के बीच पारस्परिक संघर्ष,

2) श्रीलंका का शामिल होना; और

3) समुद्र पार के क्षेत्रों में, विशेषकर दक्षिण-पूर्वी एशिया में, भारतीय प्रभाव का फैलना। इसकी चरम पराकाष्ठा चोल नरेश राजेन्द्र प्रथम के नौसेना अभियान (सन् 11वीं सदी ई. के मध्य) में हुई।

चोल नरेश राजेन्द्र प्रथम के नेतृत्व में गंगा घाटी तक पहुंच गए थे। इस अभियान को गंगायकोण्डा चोलापुरम (तंजावूर के उत्तर-पूर्व में स्थित) में महान मंदिर बनवाकर अमरत्व प्रदान किया गया।

**मानचित्र-1 भारत 1000 ई. से 1200 ई. तक**

## 8.3 सन् 800-1300 ई. के मध्य भारतीय राजनीतिक संगठन का पुनर्गठन

इस विषय पर 1960 के दशक के प्रारंभिक वर्षों से अब तक जो कुछ भी लिखा गया है, उन सबमें सामान्यतः तीन

### 8.3.1 सामंतीय राजनीतिक संगठन

इस विचार का प्रतिपादन प्रो. आर. एस. शर्मा ने 1965 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **इण्डियन फ्यूडेलिज्म** में किया। यह भूमि अनुदानों के भारतीय चरित्र पर आधारित है। (देखिए उपभाग 1.2.1 और भाग 1.7)। यह निम्नलिखित पर केन्द्रित है :

क) भूमि के नियंत्रण एवं अधिकार पर आधारित प्रशासनिक ढांचा,

ख) राजनीतिक प्रभुत्व का विखंडन,

ग) भू-स्वामी बिचौलियों का पदानुक्रम,

घ) कृषकों की भू-स्वामियों पर निर्भरता,

च) कृषकों का दमन एवं गतिहीनता,

छ) धातु मुद्रा का सीमित उपयोग (उपभाग 3.3.1 और उपभाग 3.4.2 को भी देखिए)।।

भू-स्वामियों पर किसानों की निर्भरता एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न-भिन्न थी। कृषि, दस्तकारी, वस्तु उत्पादन, व्यापार एवं वाणिज्य तथा नगरीकरण के विकास ने किसानों के बीच विभेद करने वाली परिस्थितियों को पैदा किया (देखिए खंड 1)। भूमि के ऊपर पदानुक्रम नियंत्रण कुछ निश्चित क्षेत्रों में भूमि को किराए पर देने की प्रथा से उत्पन्न हुआ और इसी कारणवश भू-स्वामियों के विभिन्न वर्ग पैदा हुए।

अभी हाल के वर्षों में मध्यकालीन भारत के संदर्भ में सामंतीय संगठन की वैधता पर प्रश्न उठाए गए हैं। इस संदर्भ में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि मध्यकालीन समाज में आत्म-निर्भर या स्वतंत्र कृषक उत्पादन का प्रचलन था। किसानों का उत्पादन के साधनों एवं प्रक्रियाओं पर नियंत्रण था। इसके साथ-साथ यह भी तर्क दिया जाता है कि सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे में सापेक्ष स्थायित्व था और कृषि उत्पादन तकनीकों में भी कोई अधिक परिवर्तन नहीं हुए थे। उत्पादन के साधनों के पुनर्वितरण की अपेक्षा अतिरिक्त उत्पादन के वितरण एवं पुनर्वितरण पर संघर्ष अधिक था। राज्य को प्राप्त होने वाला अतिरिक्त कृषि उत्पादन शोषण का मुख्य उपकरण था। भूमि की अधिक उर्वरकता तथा किसान के भरण-पोषण के निम्न स्तर ने सापेक्ष स्थायित्व की परिस्थितियों में राज्य द्वारा किए जाने वाले अतिरिक्त उत्पादन के संचयन को सुविधाजनक बनाया। लेकिन इस विचार ने भूमि पर एक वर्ग के सर्वोच्च अधिकारों तथा दूसरे वर्ग के निम्न स्तर के अधिकारों पर ध्यान नहीं दिया गया। वास्तव में सत्य यह है कि प्रारंभिक मध्यकाल में भूमि के एक ही टुकड़े पर किसानों को निम्न अधिकार तथा भू-स्वामियों को उच्च अधिकार प्राप्त थे। भूमि अनुदानों में किसानों की तुलना में भू-स्वामियों की स्थिति को स्पष्ट रूप से मज़बूत किया गया था। दुर्भाग्यवश सामंतीय राजनीति के आलोचक किसानों की अधीनता एवं गतिहीनता के विशाल प्रमाणों को नहीं देखते हैं, जो सामंतीय व्यवस्था के अनिवार्य तत्त्व हैं। इसके अतिरिक्त इस व्याख्या द्वारा यह आलोचक भारतीय समाज की जड़ता एवं अपरिवर्तनशीलता के औपनिवेशिक विचार को प्रबलता प्रदान करने की चेष्टा कर रहे हैं।

### 8.3.2 खण्डात्मक राज्य

मध्यकालीन राजनीति को विशेष रूप से मध्यकालीन दक्षिण भारत को खण्डात्मक राज्य की अवधारणा द्वारा समझने का प्रयास किया गया है। खण्डात्मक राज्य का तात्पर्य उस राज्य से है जिसके अंतर्गत आनुष्ठानिक आधिपत्य तथा राजनीतिक संप्रभुता के क्षेत्र एक ही सिक्के के दो पहलू नहीं होते हैं। विधिवत आधिपत्य या विधिवत अर्ध-स्वतंत्र राज्य सामान्यतः उदार एवं उसका क्षेत्र परिवर्तनीय होता है। लेकिन राजनीतिक संप्रभुता केंद्रीय क्षेत्र तक सीमित होती है। खण्डात्मक राज्य में विभिन्न स्तरों पर सहायक शक्ति के बहुत से केन्द्र विद्यमान होते हैं और वह राज्य शक्ति से अलग पदानुक्रम रूप में संगठित होता है। शासक वंश के राजाओं ने प्राथमिक केंद्र से सहायक केंद्रों को वैचारिक रूप से एकीकृत किया है। राज्य के खण्डों में वास्तविक राजनीतिक नियंत्रण स्थानीय सम्पन्न वर्ग द्वारा किया जाता है। यह भी माना जाता है कि ब्राह्मणों एवं प्रभुत्वशाली किसानों के मध्य घनिष्ठ सहयोग विद्यमान था। खण्डात्मक राज्य के प्रतिपादन की कुछ सीमाएं हैं। आनुष्ठानिक आधिपत्य को सांस्कृतिक आधिपत्य के साथ उलझा दिया जाता है। यह शक्ति के भिन्न-भिन्न केंद्रों को मुख्य क्षेत्र से अलग समझती है और उनको राज्य शक्ति के अंगों के रूप में नहीं देखती। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दक्षिण भारतीय किसानों के चरित्र की विषमताओं को भली-भांति नहीं समझा गया है। जहां तक खण्डात्मक राज्य के द्वारा राज्य के ढांचे की राजनीतिक तथा आर्थिक विशालता को इसकी अनुष्ठानिक विशालता तक सहायक बनाने का प्रश्न है, उसमें वह अधिक विश्वास प्रेरित नहीं कर पाता है। इस अवधारणा को राजपूत राजनीतिक संगठन पर भी लागू किया गया है। ऐडन साउथहाल एवं बर्टेन स्टीन इस विचार के सबसे बड़े प्रतिपादक हैं।

### 8.3.3 एकीकृत राजनीतिक संगठन

इस विचार के प्रतिपादक प्रो. बी.डी. चट्टोपाध्याय हैं। इनके अनुसार राजनीतिक प्रक्रिया का अध्ययन करते समय राज्य व्यवस्था के स्थापित मानकों और केन्द्र बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त राज्य के सपाट प्रसार में राज्य स्थापना से पूर्व की राजनीतिक व्यवस्था की राज्य राजनीति व्यवस्था में रूपांतरण और स्थानीय राजनीति का उस ढांचे में एकीकरण जो स्थानीय राजनीति की सीमाओं से बाहर निकल गया हो तथा शासक परिवारों की वृद्धि को प्रारंभिक

मध्यकाल भारत में सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। सत्ता के विसर्जित केंद्रों का प्रतिनिधित्व सामान्यतः कथित **सामंत** व्यवस्था द्वारा होता था। **सामंत** राजनीतिक संगठन के उस ढांचे में एकीकृत थे, जिसके अंतर्गत स्वामीदास संबंध अन्य संबंधों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण थे। सामंतों का राजनीतिक ढांचे के एक विशाल अंग के रूप में रूपांतरण स्वयं में पदानुक्रम का प्रमाण है और इस तरह से यह एकीकरण के राजनीतिक आधार को स्पष्ट करता है। राजनीतिक संगठन के आधार के रूप में पद का तात्पर्य है केन्द्र के प्रति पहुंच में भिन्नता तथा पदानुक्रम में परिवर्तन। यह भी माना जाता है कि पद को राजनीतिक संगठन का आधार मानने से पदाधिकारियों में आपस में एवं पदाधिकारियों और राजा (सर्वोच्च पद धारण करने वाले) के बीच संकट पैदा हुआ। पद व्यवस्था पर आधारित यह एकीकृत राजनीतिक संगठन खण्डात्मक राज्य की अवधारणा के समीप ही अधिक है।

एकात्मक राजनीतिक संगठन सामंतीय राजनीतिक संगठन की भांति राजनीतिक प्रक्रियाओं के समकालीन आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक परिवर्तनों के समांतर ही देखता है। जैसे कि :

1) ग्रामीण कृषि बस्तियों का सपाट प्रसार (देखिए भाग 1.2);

2) **वर्ण** विभाजन पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की प्रमुख विचारधारा का सपाट प्रसार (देखिए भाग 2.1 और भाग 2.3); और

3) स्थानीय सम्प्रदायों, अनुष्ठानिक एवं पवित्र केंद्रों का एक बड़े ढांचे में एकीकरण (देखिए भाग 2.3)।

लेकिन इस प्रकार का निर्धारण पारिभाषिक रूप से संदिग्धता पूर्ण है। ''शासक परिवार का आधिपत्य'' और ''राज्य समाज'' जैसे शब्दों को स्पष्ट नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त सामंत अपनी राजनीतिक समझ के बावजूद भू-स्वामी कुलीन ही बने रहे। इन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि खण्डात्मक राज्य और एकीकृत राज्य कोई वैकल्पिक भौतिक आधार उपलब्ध नहीं कराते, जो सामंतीय राजनीतिक संगठन का मुकाबला कर सके। एकीकृत एवं खण्डात्मक, दोनों प्रकार के राज्यों की व्याख्या उन भूमि अनुदानों के संदर्भों में की जा सकती है जो सामंतीय ढांचे के निर्णायक तत्त्व थे। जिस तरह से सरदारों के स्थानीय भू-स्वामी अपनी वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियाँ राजा से प्राप्त करते थे, राजा को नजराना देते और उसके प्रति सैन्य एवं प्रशासनिक अनुबंधों को पूर्ण करते और (उसी प्रकार से) वे एकीकरण के लिए कार्य करते। दूसरी ओर, जब वे स्थानीय किसानों पर स्वायत्त तौर पर शासन करते थे वह खण्डात्मक प्रभुत्व के समान था। ''शासक परिवार का भूगोल'' जो एकीकृत राजनीतिक संगठन की अवधारणा को पुनर्गठित करने में एक निर्णायक तत्त्व है, अखिल भारतीय स्तर पर उपलब्ध नहीं होता। चौहानों एवं परमारों को छोड़कर, ''शासक परिवार परम्परा'' ने राजनीतिक संगठन में कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं की। पदों का निर्माण भी भूमि के असमान वितरण और उसके राजस्व स्रोतों के आधार पर किया गया था। इसी प्रकार, राजनीतिक आधिपत्य और अनुष्ठानिक आधिपत्य के मध्य की भिन्नता उनके क्रमशः अंतर्भाग तथा बाह्य क्षेत्र की एकता से बनी थी। इसी को खण्डात्मक राज्य की अवधारणा का मूलभूत आधार समझा गया लेकिन इस अवधारणा की वस्तुनिष्ठता सिद्ध करने के लिए भारतीय उपमहाद्वीप के बहुत से क्षेत्रों से तथ्यपरक आंकड़ों का अभाव है। लेकिन दूसरी ओर, यदि हम मध्यकालीन भारतीय राजनीति का पुनर्गठन सामंतवाद के परिप्रेक्ष्य में करें तब हम ऐसे तत्त्वों पर निर्भर करते हैं, जिनको अखिल भारतीय स्तर पर लागू किया जा सकता है।

**बोध प्रश्न 2**

1) दक्खन तथा दक्षिण भारत में राजनीतिक घटनाक्रम की रूपरेखा बताइए। उत्तर 15 पंक्तियों में दीजिए।

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

2) सामंतीय राजनीतिक संगठन की अवधारणा पर दस पंक्तियों में टिप्पणी लिखिए।

..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................

3) "खण्डात्मक राज्य" की अवधारणा से आप क्या समझते हैं? दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................
..........................................................................................

## 8.4 सारांश

सन् 800 से 1300 ई. तक भौगोलिक आकार, आर्थिक ढांचा तथा वैचारिक स्वरूप मुख्यतः एक क्षेत्र के राजनीतिक संगठन की प्रकृति को निर्धारित करते थे।

- कश्मीर में पुरोहितों तथा दमरों जैसे भू-स्वामी सामाजिक गुटों ने आंतरिक राजनीतिक को प्रभावित किया।
- नौवीं सदी ई. के मध्य तक गंगा घाटी एवं कन्नौज संघर्ष का मुख्य कारण थे। उत्तर, पश्चिम तथा दक्खन की तीन मुख्य शक्तियाँ क्रमशः पाल, गुर्जर प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट इस संघर्ष में क्रियाशील थी।
- इस समय असम का रूपांतरण आदिवासी राजनीति से राज्य राजनीति में हो रहा था और उसका संपर्क उत्तरी भारत के साथ स्थापित हो रहा था।
- उड़ीसा में राज्य का उद्भव मज़बूत जनजातीय तत्त्वों के साथ हो रहा था।
- पश्चिम तथा मध्य भारत में इस समय में राजपूत शासकों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। उनमें से अधिकतर गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे।
- पश्चिम तथा मध्य एशिया के राजनीतिक घटनाक्रम का भारतीय राजनीति पर काफी प्रभाव पड़ा। सातवीं सदी ई. में अरबों का व्यापारियों के रूप में आगमन के समय से 13वीं सदी ई. के प्रारंभ में तुर्क साम्राज्य की स्थापना तक भारतीय उपमहाद्वीप विदेशी शक्तियों के आक्रमण का मुख्य निशाना बना रहा।
- दक्खन तथा दक्षिण में कर्नाटक तथा कावेरी घाटी में स्थित राज्यों के बीच लगातार संघर्ष होते रहते थे। इसी प्रकार से आंध्र प्रदेश के समुद्र तट (वेंगी) पर अधिकार करने की लालसा को लेकर चोलों, पाण्ड्यों एवं चेरों के मध्य संघर्ष हुए और इन संघर्षों में यदा-कदा श्रीलंका भी शामील हुआ। इस क्षेत्र की राजनीति की मुख्य विशेषता यही संघर्ष थे। चोल राजाओं ने समुद्र के मार्गों से दक्षिण-पूर्वी एशिया तक पहुंचने के सफलतापूर्वक प्रयास किये।
- मध्यकालीन भारतीय राजनीतिक ढांचे का पुनर्गठन करने के लिए तीन प्रकार की अवधारणाओं को आधार बनाया गया है। सामंतीय राजनीतिक संगठन, खण्डात्मक राज्य तथा एकीकृत राजनयिक संगठन। बाद की दो अवधारणाओं

को स्थानीय स्तर पर एवं सीमित तौर पर ही लागू किया जा सकता है। उनको भौतिक आधार पर वैकल्पिक रूप से तर्कसंगत नहीं बनाया जा सकता। ये अवधारणाएं भी "सामंतीय प्रारूप" के उत्पादन की शक्तियों के मूल तत्त्वों पर निर्भर करती हैं। सामंतीय तत्त्वों को अखिल भारतीय स्तर की राजनीति में प्रयुक्त किया जा सकता और उन परिस्थितियों में शोध करने के लिए प्रो. आर. एस. शर्मा द्वारा प्रस्तुत "सामंतीय प्रारूप" ही अधिक तर्क संगत है। लेकिन वास्तव में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की राजनीति का विश्लेषण अलग-अलग किया जाना चाहिए तथा भारतीय उपमहाद्वीप के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के बीच तथ्यपरक संबंधों को स्थापित करने की आवश्यकता है।

## 8.5 शब्दावली

**दमरा :** कश्मीर के शक्तिशाली भू-स्वामी।

**मण्डल :** एक प्रशासनिक विभाजन।

**मत्स्य-न्याय :** मछलियों का कानून—अराजकता की स्थिति।

**राजन्यका :** बिचौलिया भू-स्वामी एवं एक अधिकारी।

**राणका :** बिचौलिया भू-स्वामी एवं एक अधिकारी।

**सामंत चक्र :** ज़मींदारों का इलाका।

## 8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) आप अपने उत्तर में कश्मीर एवं गंगा घाटी के राजनीतिक घटनाक्रम को शामिल करें। (देखिए उपभाग 8.2.1)।

2) देखिए उपभाग 8.2.2

3) i) √ ii) × iii) √ iv) √

**बोध प्रश्न 2**

1) आप अपने उत्तर में राष्ट्रकूटों, चोलों, पाण्ड्यों एवं चेरों के राजनीतिक इतिहास को शामिल करें (देखिए उपभाग 8.2.3 और 8.2.4)।

2) देखिए उपभाग 8.3.1

3) अनुष्ठानिक एवं राजनीतिक संप्रभुता के बीच भेद (देखिए उपभाग 8.3.2)।